रामधारी सिंह दिवाकर

रामधारी सिंह दिवाकर का जन्म नरपतगंज, अररिया (बिहार) में 1 जनवरी 1945 ई० में हुआ । इनकी आरंभिक शिक्षा ग्रामीण माहौल में ही हुई । इन्होंने उच्च शिक्षा बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर और भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर से प्राप्त की । इन्होंने हिंदी में एम० ए० और पी-एच० डी० की डिग्री प्राप्त की । अध्यापन को वृत्ति के रूप में अपनाकर ये मिथिला विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर, हिंदी विभाग से संलग्न रहे । कई वर्षों तक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के निदेशक भी रहे ।

रामधारी सिंह दिवाकर की पहचान मुख्य रूप से एक कथाकार की है । इन्होंने कहानियाँ और उपन्यास विपुल संख्या में लिखे हैं । इनके कहानी संकलन हैं – 'नये गाँव में', 'अलग-अलग अपरिचय', 'बीच से टूटा हुआ', 'नया घर चढ़े', 'सरहद के पार', 'धरातल', 'मखान पोखर', 'माटी पानी' । इनके उपन्यास हैं – 'क्या घर क्या परदेस', 'काली सुबह का सूरज', 'पंचमी तत्पुरुष', 'आग, पानी और आकाश' । इनके अतिरिक्त दो संपादित कहानी संग्रह, लेख, समीक्षाएँ भी प्रकाशित हैं ।

दिवाकर की कहानियाँ आजादी के बाद भीतर से बदलते और टूटते हुए गाँव की पीड़ा की ऐसी कहानियाँ हैं जो गाँव पर लिखी जाने वाली कहानियों से थोड़ी भिन्न हैं । पिछली दशाब्दियों में गाँव का जो नौकरी पेशा वर्ग शहरों का अधिवासी हो गया है, उस वर्ग के संस्कार की जड़ें गाँव में फैली हैं, लेकिन शाखाएँ और फूल-पत्ते शहरी आसमान में लहलहाते हैं । इस वर्ग का अंतर्विरोध गाँव के जीवन का वह अंतर्विरोध है जो शहरी संसर्ग से उत्पन्न हुआ है । इस रूप में दोनों पक्षों का व्यक्ति और समाज जिस जगह टूटा है, रामधारी सिंह दिवाकर की कहानियाँ उसी जगह से आकार ग्रहण करती हैं ।

'सूखी नदी का पुल' गाँव के सामाजिक ताने-बाने में आए बदलाव की कहानी है । गाँव के उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच की लगातार बढ़ती फाँक तो इस कहानी में दिखती ही है, साथ ही उस फाँक को पाटने वाली मानवीय दृष्टि भी प्रतिष्ठित होती है ।

सूखी नदी का पुल

गाँव के रेलवे स्टेशन पर गाड़ी ज्यों ही रुकी, लीलावती उछाह भरे मन से प्लेटफॉर्म की तरफ देखने लगी । पूरी उम्मीद थी कि नैहर से कोई न कोई आया ही होगा ।

वे सब आए थे जिनकी वह उम्मीद किए हुए थी । भैया थे, दोनों भतीजे थे – सुरेश और नरेश और एक कोई अपरिचित था । अपनी अगवानी में इन सब को आया देख लीलावती को ऐसा लगा जैसे सूखी-प्यासी धरती पर बादल बरस गए हों ।

स्टेशन के बाहर जीप लगी हुई थी । जीप !..... लीलावती को प्रसन्न होना चाहिए था जीप देखकर, लेकिन मन को जाने क्यों ठेस-सी लगी । उसने तो सोचा था, टप्पर वाली बैलगाड़ी या ओहार वाली बैलगाड़ी आई होगी ।

'अपनी जीप है बुआ' बोलता हुआ सुरेश ड्राइवर वाली सीट पर बैठ गया । नरेश जीप के पास खड़ा था और बार-बार अपनी पैंट की फूली हुई जेब को टटोल रहा था । जीप की सीट पर सुविधाजनक ढंग से बैठने के लिए उसने जेब से कोई काली-सी चीज निकाली और झट से तौलिए में लपेट लिया ।

'तौलिए में क्या छिपा रहे हो नरेश ?'

'कुछ नहीं बुआ, पिस्तौल है ।'

चौंक गई लीलावती, 'पिस्तौल है और कहते हो कुछ नहीं है !'

भैया मुस्कराते हुए बोले, 'इसमें अचरज की कौन-सी बात है बुच्ची दाय !'

भैया के मुँह से बुच्ची दाय संबोधन कितना प्यारा, कितना सुखद लगा था लीलावती को ! उसने भैया की तरफ गौर से देखा । उनके खादी कुर्ते की जेब भी फूली हुई थी ।

'आपकी जेब में भी..... । लाइसेंस वाली है न !'

भैया हँसने लगे थे, 'अरे नहीं रे !... लाइसेंस-वाइसेंस नहीं । अपने गाँव की बनी है – कंट्रीमेड !' लीलावती की वयस्क उम्र की बड़ी-बड़ी मासूम आँखें आश्चर्य से कुछ ज्यादा बड़ी हो गईं । जीवन भर खादी के कपड़े पहनने वाले भैया की जेब में पिस्तौल !

'समय ही ऐसा आ गया है बुच्ची दाय ! अपनी सुरक्षा के लिए यह सब अब रखना पड़ता है । गाँव अब पहले वाला गाँव नहीं रहा ! जब से आरक्षण लागू हुआ है, बैकवार्ड-फारवर्ड की दुर्भावना बुरी तरह फैल गई है । गाँव में जातियों के अलग-अलग संगठन हो गए हैं, निजी सेनाएँ हो गई हैं । जमीन-जायदाद को बचा पाना मुश्किल हो गया है । तुम्हारी वाली जो पाँच एकड़

जमीन है वह तो समझो गिद्धों के लिए मांस का लोथड़ा बनी हुई है ।' भैया बोल ही रहे थे कि बीच में नरेश ने कहा, 'हमलोगों की भी अपनी सेना है बुआ !'

भैया कहने लगे, 'अच्छा हुआ तुम आ गई बुच्ची दाय ! अब अपनी जमीन का 'नौ-छौ' कुछ करके ही जाना ।' चलती जीप की घरघराहट में सामने बैठे भैया बोलते जा रहे थे ।

लीलावती के विवाह के समय कन्यादान करते हुए बाबूजी ने बेटी को पाँच एकड़ जमीन दान में दी थी । वही जमीन भैया के जी का जंजाल बनी हुई है । कब तक करते रहें जमीन की हिफाजत ! केस-मुकदमा....यह सब अभी कैसे बता दें वर्षों बाद नैहर लौटती बहन बुच्ची दाय को !

तेरह-चौदह वर्षों बाद लीलावती नैहर लौट रही है । पिछली बार माँ के श्राद्ध-कर्म पर आई थी । सब कुछ याद आ रहा है लीलावती को ! याद आ रहा है गाँव का नैहर सिर्फ अपने माँ-बाप या भाई-भौजाई का घर नहीं होता, पूरा गाँव होता है । यह शहर तो है नहीं ! यहाँ तो पूरा गाँव रिश्तों-नातों में बँधा रहता है । और गाँव के वही रिश्ते-नाते इस वक्त बड़ी शिद्दत से याद आ रहे हैं लीलावती को । सबसे ज्यादा याद आ रही है सहेलिया माय ! मुंबई में जब-जब नैहर की याद आई, खवासटोली की वह सहेलिया माय सबसे ज्यादा याद आई । माँ कहती थी - सहेलिया माय खवासिन नहीं, तुम्हारी दूसरी माँ है ! इसी ने तुमको अपना दूध पिलाकर पाला-पोसा । माँ कहती थी - जब तुम जन्मी थी, अपना दूध नहीं उतरता था । डागडर-बैद, ओझा-गुनी सब हार गए । गाय-बकरी-भेंड़ी किसी का दूध तुमको पचता नहीं था। एकदम मरने-मरने को हो गई थी तुम । तब सहेलिया माय सामने आई । नई-नई लरकोरी बनी थी । गोद में बेटा था कलेसर । उसी ने अपना दूध पिला-पिला कर तुमको जिंदा रखा ।

.....जीप में बैठी लीलावती दोनों तरफ के भूले-बिसरे टोलों-मुहल्लों को पीछे की ओर भागते देखती रही । सीमेंट का पुल आ गया । सूखी नदी का पुल ! पिछली बार आई थी तब नदी में पानी था और सीमेंट के पुल की जगह काठ का पुल था - कठपुल्ला । नदी सूख गई है अब । रेत ही रेत ! रेत की नदी !

जीप दरवाजे पर लगी । एकदम बदल गया है घर-दुआर । खपरैल की जगह पक्के का मकान । दरवाजे पर जीप, ट्रैक्टर, थ्रेसर मशीन और जेनरेटर । बिजली के पोल गाँव तक आ गए हैं । पुल के इस पार से ही देखा था लीलावती ने ! शून्य में पतली-पतली रेखाओं-से बिजली के तार !

नरेश कह रहा था, 'आपको यहाँ कोई कमी महसूस नहीं होगी बुआ ! सब कुछ है घर में । फोन, फ्रिज, टीवी, वीसीडी.... सब कुछ । कैसे कहे लीलावती कि यह सब देखने नहीं आई है मुंबई से उसकी बुआ । यह सब-कुछ और इससे भी ज्यादा है उसके पास । वह तो नैहर की पहले वाली असुविधाओं के लिए तरस रही है । सखी-सहेलियाँ, नदी-पोखर, खेत-खलिहान, टोले-पगडंडियाँ, नाथ बाबा का थान्ह, राजा सल्हेस का गहबर, बुढ़िया बाड़ी, बरहम बाबा का

मंदिर.... कैसे कहे कि क्या देखना चाहती है बुआ !

अब तो साँझ हो गई, वरना आज ही एक चक्कर लगा आती अपनी खवासटोली का और सहेलिया माय को दो साड़ियाँ दे आती । जिन्हें वह बड़ी लालसा से मुंबई से लाई है । अब तो बहुत बूढ़ी हो गई होंगी । पैर छूने पर आशीष देंगी - हमरे अइसन झुल-झुल बूढ़ हो जइह बेटी ! अहिबात बनल रहे जब तक गंगा-जमुना में पानी रहे ..... ।

लेकिन शाम में भौजी, सुरेश, नरेश सबकी उपस्थिति में भैया ने सहेलिया माय की खवासटोली के विषय में जो कुछ कहा उससे तो लीलावती के होश उड़ गए ।

'सुनती हो बुच्चीदाय ? सहेलिया माय का परिवार तुम्हारी वाली पाँच एकड़ जमीन बटाई लिए हुए था । उसका बेटा है न कलेसरा ! उसने जमीन पर सिकमी बटाई का दावा ठोंक दिया। यह सब मैंने तुमको कभी बताया नहीं । केस-मुकदमा चला । जमीन पर पहले दफा एक सौ सात लगा, फिर एक सौ चौवालीस । मामला हाई-कोर्ट तक पहुँचा । हमलोगों का क्या मुकाबला करता कलेसरा । केस में हार गया । हमलोगों की डिग्री हो गई ।.....' भैया बोल कर मुस्कराने लगे । नरेश बगल में बैठा हुआ था । बुआ की तरफ देखता कहने लगा, 'असल बात तो बता ही नहीं रहे हैं बाबूजी । असल बात यह है कि कलेसरा एक खूनी राजनीतिक पार्टी से जुड़ा हुआ है । जबसे आरक्षण लागू हुआ है, खूनी पार्टी ज्यादा उग्र हो गई है । पाँच-छह साल पहले आपवाली जमीन पर भारी बवेला मचा । कलेसरा ने तो फरसा ही चला दिया था बाबूजी पर । वह तो कहिए कि बीच में आ गया कलेसरा का बाप सोनेलाल । उसने अपने हाथ को आगे बढ़ा दिया । बेचारे की कलाई कट कर जमीन पर गिर गई । बाबूजी तुरंत उसको जीप पर बिठा कर अस्पताल ले गए। सोनेलाल ने डाक्टर से कहा - चारा मशीन से कलाई कट गई है ।....'

काठ की मूरत बनी लीलावती यह सब सुनती रही । क्या यह सब जो वह सुन रही है, सच है या कोई कथा-कहानी है ? एक ही माँ के स्तनों का दूध पीनेवाले कलेसर और लीलावती !. ... अवसाद के काले बादलों में घिरी लीलावती को सुना कर भैया कहने लगे, 'जबसे आरक्षण लागू हुआ है, पिछड़ी जातियों के लोग हमलोगों को अपना दुश्मन समझने लगे हैं ।' भैया के बोलने के बीच में ही नरेश बोल पड़ा, 'लेकिन हमलोग पीछे हटने वाले नहीं हैं बुआ । हमलोगों का भी अपना संगठन है, अपनी सेना है......'

'साफ-साफ दो फाँक हो गया है गाँव । खवासटोली और पूरे पछियारी टोले से तुम्हारी वाली जमीन के मामले के बाद से ही आना-जाना, न्योता-पिहानी सब बंद है । खूनी राजनीतिक पार्टी को खवासटोली वाले चढ़ाते हैं कि सामंती जात के हैं हमलोग !.....' अवसन्न भाव से शून्य में देर तक देखती रही लीलावती ।

दिन के तीसरे पहर घर के पिछवाड़े कमलपोखर की तरफ निकल गई लीलावती । एकदम सुनसान था कमलपोखर । ढेर-सारी कँटीली जंगली झाड़ियाँ उग आई थीं । बगल के किसी पेड़ से पंडुकी पक्षी की आवाज आ रही थी - तू-तुरूम ! तू-तुरूम ! - तू कहाँ ! तू कहाँ !!.

... पोखर के ऊँचे मोहार पर खड़ी लीलावती हसरत भरी आँखों से पश्चिम की तरफ देखने लगी – खवासटोली की तरफ । शहनाई और खुरदुक बाजे की मीठी-मीठी मंगलध्वनि सुनाई पड़ रही थी । पुराने नक्शे की स्मृति को उतारते हुए लीलावती सोचने लगी – खवासटोली का पहला घर सहेलिया माय का है । वहीं से शहनाई की आवाज आ रही है शायद । लगता है सादी-बियाह है खवासटोली में । शहनाई पर यह पुरानी धुन कौन बजा रहा है ! 'पिया मोर बालक हम तरुनी हे.....।' शायद रघ्घू काका होंगे ! आज के फिल्मी युग में विद्यापति के गीत की धुन कौन बजा सकता है सिवा रघ्घू काका के ! लीलावती को अपनी शादी के बाद विदाई के समय रघ्घू काका की बजाई समदौन की धुन याद आ गई – 'बड़ा रे जतन से सुग्गा रे हम पोसलौं, से हो सुग्गा उड़लै अकास !..'

खवासटोली से आती शहनाई की आवाज से मन अशांत-सा हो गया । भौजी से पूछा, 'उधर खवासटोली में कोई सादी-बियाह है क्या भौजी ? भौजी कुँहरती हुई बोली, 'मुझे क्या पता बुच्चीदाय कि कहाँ क्या हो रहा है ।' तब तक नरेश आ गया । बोला, 'हाँ शादी है कलेसर की बेटी की । अपना हलवाहा बता रहा था ।'

कलेसर की बेटी ! सहेलिया माय की पोती !... हाय रे दैव । लीलावती के मन में तूफान-सा उठने लगा – कितना अच्छा होगा यदि सहेलिया माय की पोती की शादी में वह पहुँच जाए ! लेकिन भैया-भौजी और बड़ा भतीजा सुरेश जाने देंगे भला ! बैकवार्ड-फारवार्ड ! जमीन का मामला....बोल-चाल, आना-जाना सब बंद है !.. जाने देंगे भला !

लीलावती छोटे भतीजे नरेश से बड़े प्यार से बोली, 'रे नरेश, मेरा एक काम कर दोगे ?' नरेश ने हँसते हुए कहा, 'हाँ बुआ, करूँगा । बोलिए तो सही ।' लीलावती प्रौढ़ावस्था से फिसल कर अकस्मात चंचल किशोरी बन गई थी । फुसफुसाती हुई नरेश से बोली, 'शाम होने को है नरेश और मुझे किसी भी तरह सहेलिया माय के घर पहुँचना है । किसी से कहना नहीं । बस मुझे पोखर पार करा दो । वहाँ से मैं चली जाऊँगी । और सुनो, कोई पूछे तो कह देना, बुआ पाठकजी के घर गई है ।

शाम गहरा गई । सहेलिया माय के लिए लाई दोनों साड़ियाँ लीलावती ने काँख में दबा लीं और नरेश के पीछे-पीछे चलती पोखर पार तक आ गई । खवास टोली में शायद सहेलिया माय के दरवाजे पर पेट्रोमेक्स की रोशनी दिख रही थी ! जुते हुए खेतों और 'आर-धुर' को लाँघती वह सहेलिया माय के दरवाजे पर पहुँच गई । दरवाजे पर कुछ लोग बैठे हुए थे । रोशनी की ओट में अपने को लुकाती-छिपाती लीलावती सीधे आँगन में चली गई । फूस के वही तीन छोटे-छोटे घर, छोटा-सा आँगन । गाँव-समाज की औरतों और बच्चों से आँगन भरा हुआ था । गीत-नाद हो रहा था । बाहर दरवाजे के किसी कोने में बैठे रघ्घू काका किसी पुराने फिल्मी गाने की धुन बजा रहे थे ।

भीड़-भाड़ में किसी का ध्यान नहीं गया लीलावती की तरफ । ओसारे पर पंजों के बल

बैठी सहेलिया माय को लीलावती ने पहचान लिया । वह चुपके से उसके पास गई और पैरों पर गिर पड़ी । आँखों की मंद ज्योति के कारण सहेलिया माय पहचान नहीं सकी ।

'नहीं पहचाना काकी ? मैं लीलावती ! बुच्ची दाय ! लाल बाबू की बेटी !' तब तक दूसरी औरतें आ गईं वहाँ ! अरे, बुच्ची दाय ! लाल बाबू की बेटी !.....बंबे वाली बुच्ची दाय ! लेकिन यहाँ कैसे ? घोर अचरज ! अजगैबी बात !

सहेलिया माय के सूखे स्तनों में जैसे दूध उतर आया । लीलावती सहेलिया माय के सीने में अपना चेहरा छिपाए देर तक सुबक-सुबक कर रोती रही । बाढ़ के पानी-सी यह खबर पूरे सोलकन टोले में फैल गई ।

गजब बात ! बबुआन टोले से इतनी दुश्मनी चल रही है ! आना-जाना, टोका-चाली सब बंद है और बुच्ची दाय अन्हरिया रात में गिरती-पड़ती आ गई सहेलिया माय के घर ! लोग उमड़ पड़े लीलावती को देखने ! जिंदगी की ऐसी सार्थकता लीलावती को कभी महसूस नहीं हुई थी। भीतर जैसे आह्लाद का सागर उमड़ रहा था ।

बूढ़े सोनेलाल दौड़ते आए दरवाजे से । बुच्ची दाय को देख आँखों में आँसू आ गए । आशीष के लिए उठे दाहिने लूले हाथ को अपलक देखती रही लीलावती । ओसारे पर बैठते हुए भर्राई आवाज में कहने लगे सोनेलाल, 'तुम आ गई बुच्ची दाय ! जिंदगी का सुफल मिल गया। बिस्वास नहीं हो रहा कि अपने आँगन में बुच्ची दाय को देख रहा हूँ । लगता है, कोई सपना है ।' बोलते-बोलते रोने लगे सोनेलाल ।

तभी दौड़ता-दौड़ता कलेसर आ गया और एकदम से लीलावती के पैरों पर गिर गया । रोता रहा देर तक । विवाह के उल्लास भरे वातावरण में आँसुओं की यह गंगा-जमुनी बाढ़ ! इस बाढ़ में किसका कितना कुछ डूबा, बहा - कौन जाने ! लीलावती के सामने दोनों हाथ जोड़े प्रायश्चित के दलदल से उबरने की कोशिश में बोलने लगा, 'भूल-चूक माफ कर देना दीदी ! अब ये हाथ किसी पर कभी नहीं उठेंगे ।' लीलावती कलेसर की पीठ थपथपाती रही । याद आ रही थी भैया और भतीजे की बात - कलेसर किसी खूनी राजनीतिक संगठन से जुड़ा हुआ है ।

उस आँगन में कुछ देर के लिए सब कुछ ठहर-सा गया था । लगता था, समय ही रुक गया है ।

देर रात बगल के गाँव से बारात आई । विवाह की विधियाँ चलती रहीं । सारी रात गाँव की औरतों की झुंड में बैठी लीलावती विवाह के भूले-बिसरे गीत गाती रही ।

सुबह हो गई । वैशाख के महीने का सूरज बाँस भर ऊपर चढ़ आया । लीलावती भैया के घर लौटने के लिए तैयार थी । गाँव की अपनी बुच्ची दाय को विदा करने खवास टोली के लोग ही नहीं, पूरे सोलकन टोले के लोग, औरतें, बच्चे सब एकत्र थे । इन सबसे घिरी लीलावती आम बगान के इस पार तक आई । पोखर के मोहार पर भैया, भौजी, बहू, भतीजे और बबुआन टोले के लोग खड़े थे और एकटक इसी तरफ देख रहे थे ।

वायल की गाढ़ी लाल साड़ी पहने और भर मांग सिंदूर पोते लीलावती पोखर के मोहर पर आई । सारे लोग स्तब्ध लीलावती को देखते रहे । मुंबई में सारी आधुनिक सुविधाओं के बीच रहनेवाली लीलावती इस वक्त पूरी देहातिन लग रही थी । चेहरे पर परम उपलब्धि की अपूर्व आभा ! भैया, भाभी, भतीजे सब चुप । न कोई आरोप-प्रत्यारोप, न रोष, न उलाहना ! नरेश भौंचक-सा बुआ का सिंदूरी चेहरा देखता रहा ।

दूसरी सुबह भैया ने लीलावती से उसकी पाँच एकड़ जमीन की बात चलाई, 'अपनी अमानत वापस ले लो बुच्ची दाय । चाहो तो बेच दो । अच्छी कीमत मिलेगी ।' लीलावती ने मुस्कराते हुए कहा, 'हाँ भैया, इस बार कुछ करके ही जाऊँगी । आपलोग भी मेरी जमीन को लेकर परेशानी में रहते हैं ।'

दोपहर बाद भैया ने संदूक से जमीन के कागजात निकाले और लीलावती के हाथों में देते हुए बोले, 'हाल में कटाई गई लगान की रसीद भी इसी में है ।' दोनों हाथों में जमीन के कागजात लिए लीलावती भैया, भाभी और दोनों भतीजों को चुपचाप देखती रही, फिर मुस्कराती हुई भैया से बोली, 'आपसे वचन चाहती हूँ भैया । पहले आप वचन दीजिए कि दान में मिली अपनी जमीन का मैं जो करूँगी, उसे आपलोग मंजूर करेंगे !' भैया ने दृढ़ आवाज में कहा, 'हाँ बुच्चीदाय, तुम जो फैसला करोगी, हमें मंजूर होगा !' भैया ने फिर दृढ़ आवाज में कहा, 'हाँ, बुच्चीदाय, तुम जो फैसला करोगी, हमें मंजूर होगा । आखिर जमीन तो तुम्हारी ठहरी ! वह भी दान की जमीन !' लीलावती भैया की आँखों में झाँकने लगी, 'मुझे आपलोगों की दुआ से कोई कमी नहीं है भैया । इसीलिए दान में मिली जमीन मैं दान में ही देना चाहती हूँ । आप वचन दे चुके हैं । मुकरिएगा नहीं । मैं यह जमीन सहेलिया माय को रजिस्ट्री करना चाहती हूँ । दूध का मोल कौन दे सकता है, फिर भी......। झगड़ा हमेशा-हमेशा के लिए खतम । है न सुरेश, नरेश, भौजी ? है न । सब हतप्रभ ! और लीलावती का चेहरा ऐसा दिख रहा था जैसे कोई बहुत बड़ी चीज मिल गई हो उसे । हँसती हुई भैया से बोली, 'सहेलिया माय और कलेसर कल फारबिसगंज रजिस्ट्री ऑफिस में मिलेंगे । मैंने कह दिया है उनसे । मेरा मान रखिएगा भैया ! पता नहीं फिर कब लौट कर आना हो नैहर। आपको और सुरेश-नरेश को भी साथ चलना होगा - सिनाखत (शिनाख्त) के लिए ।'

बुआ के अप्रत्याशित फैसले पर सुरेश और नरेश एक दूसरे का चेहरा देखते रहे । और इसके दूसरे दिन भैया लीलावती का मान रखने के लिए फारबिसगंज जाने के लिए तैयार थे । जीप में ड्राइवर की सीट पर सुरेश था । भैया के खादी के कुर्ते की जेब में पिस्तौल की जगह जमीन के कागजात का पुलिंदा था । जीप जब दरवाजे से आगे बढ़ी तब लीलावती को ऐसा महसूस हुआ जैसे दूध की कोई उमगी हुई उजली नदी है और उस नदी में वह ऊब-डूब नहा रही है।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. स्टेशन के बाहर लगी जीप को देखकर लीलावती के मन को क्यों ठेस-सी लगी ?
2. गाँव शहर से किस प्रकार भिन्न होता है ? वर्णन करें ।
3. 'बुच्ची दाय' सुनने में लीलावती को आनंदातिरेक की अनुभूति क्यों होती है ?
4. बुच्ची दाय को सबसे ज्यादा किसकी याद आती है और क्यों ?
5. गाँव में लीलावती फोन, फ्रिज, टीवी, वीसीडी की जगह क्या देखना चाहती है ?
6. प्रस्तुत कहानी में प्रयुक्त उन तथ्यों को एकत्र करें, जिससे ग्रामीण जीवन का चित्र उभरता है ।
7. बुच्ची दाय जब सहेलिया माय से मिलने पहुँची तो सबको अचरज क्यों हुआ ? वहाँ के दृश्य का वर्णन करें ।
8. लीलावती खवासटोली और बबुआन टोली को तबाह होने से किस प्रकार बचा लेती है ?
9. लीलावती अपनी पाँच एकड़ जमीन भैया को न देकर सहेलिया माय के नाम करने का फैसला क्यों करती है ?
10. गाँव में दंगा भड़कने का मुख्य कारण क्या है ?
11. भाव स्पष्ट करें –
    (क) ''तुम्हारी जो पाँच एकड़ जमीन है वह तो समझो गिद्धों के लिए मांस का लोथड़ा बनी हुई है ।''
    (ख) ''समय ही ऐसा आ गया है बुच्ची दाय ! अपनी सुरक्षा के लिए यह सब अब रखना पड़ता है । गाँव अब पहले वाला गाँव नहीं रहा ।''
    (ग) सूखी नदी का पुल ! पिछली बार आई थी तब नदी में पानी था और सीमेंट के पुल की जगह काठ का पुल था - कठपुल्ला । नदी सूख गई है अब । रेत ही रेत ! रेत की नदी !
    (घ) ''जीप जब दरवाजे से आगे बढ़ी तब लीलावती को ऐसा महसूस हुआ जैसे दूध की कोई उमगी हुई उजली नदी है और उस नदी में वह ऊब-डूब रही है ।''
    (ङ) ''सिर्फ अपना अपने माँ-बाप या भाई-भौजाई का घर नहीं होता, पूरा गाँव होता है । यह शहर तो है नहीं ! यहाँ तो पूरा गाँव रिश्तों-नातों में बँधा रहता है ।''
    (च) ''विवाह को उल्लास भरे वातावरण में आँसुओं की यह गंगा-जमुनी बाढ़ ! इस बाढ़ में किसका कितना कुछ डूबा, बहा - कौन जाने !''
12. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखें -
    नौ-छौ करना, काठ की मूरत, पीठ थपथपाना, ऊब-डूब होना

13. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखें ।
कंट्रीमेड, हतप्रभ, शिनाख्त, अप्रत्याशित, दुर्भावना, हिफाजत, मुकदमा, लरकोरी, कठपुल्ला, झुल-झुल बूढ़, संदूक, प्रत्यारोप
14. शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए कहानी का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।
15. 'सूखी नदी का पुल' कहानी का सारांश लिखें ।

पाठ के आस-पास

1. इस कहानी के आधार पर गाँव और शहर की उन विशेषताओं को बताएँ जो गाँव को शहर से अलग करती हैं ।
2. आजकल गाँव अपने बदले हुए स्वरूप में दिख रहे हैं । गाँव का शहरीकरण हो रहा है । उन कारणों की पड़ताल करें जो गाँव की इस बदलती हुई स्थिति के लिए उत्तरदायी हैं ।
3. किसी गाँव का भ्रमण करें । उस गाँव में निहित जिन विशेषताओं ने आपको आकृष्ट किया, उसे अपने शब्दों में बताएँ ।

भाषा की बात

1. वाक्य-प्रयोग द्वारा निम्नांकित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करें -
नौ-छौ करना, जी का जंजाल होना, होश उड़ना, पीठ थपथपाना
2. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप बताएँ –
दैब, जिनगी, अन्हरिया, अजगैबी, सादी-बियाह
3. निर्देशानुसार उत्तर दें -
   (क) लीलावती के विवाह के समय कन्यादान करते हुए बाबूजी ने बेटी को पाँच एकड़ जमीन दान में दी थी । (विशेषण बताएँ)
   (ख) हमलोगों की भी अपनी सेना है बुआ । (अव्यय बताएँ)
   (ग) पता नहीं फिर कब लौट कर आना हो नैहर । (देशज शब्द बताएँ)
   (घ) लीलावती उछाह भरे मन से प्लेटफॉर्म की तरफ देखने लगी । (विदेशज)
   (च) भाई-भौजाई (समास बताएँ)
   (छ) देहातिन (प्रत्यय बताएँ)
4. विपरीतार्थक शब्द बताएँ -
अपना, उग्र, पुराना, सच
5. प्रस्तुत कहानी में कुछ सहचर शब्द आए हैं जैसे - खेत-खलिहान, डागडर-बैद । इसी तरह के कुछ सहचर शब्द पठित कहानी से चुनें ।

शब्द निधि

अगवानी : आगे बढ़कर स्वागत करना
हतप्रभ : भौंचक्का
दुर्भावना : बुरी नीयत
हिफाजत : सुरक्षा
शिद्दत : जोर-शोर से

लरकोरी	:	वह स्त्री जिसकी गोद में नन्हा बच्चा हो
पोखर	:	तालाब
पगडंडी	:	खेतों के बीच का रास्ता
आशीष	:	आशीर्वाद
अहिबात	:	सुहाग के अर्थ में
दावा ठोंकना	:	अधिकार दिखाना
अवसन्न	:	अवसाद से बना विशेषण
मोहार	:	मुँह की ओर का भाग
तरुनी	:	नई युवती
समदौन	:	एक प्रकार का लोकगीत
प्रौढ़ावस्था	:	वयस्कता
अकस्मात्	:	अचानक
मंद	:	धीमा
शिनाख्त	:	जाँच पड़ताल
आह्लाद	:	आंतरिक खुशी
प्रायश्चित	:	पश्चाताप, पछतावा
अमानत	:	थाती, किसी की सुरक्षा में
मुकरना	:	नकारना, अस्वीकार करना
अप्रत्याशित	:	जिसकी आशा न की गई हो
पुलिंदा	:	गठरी
आभा	:	चमक
भौंचक	:	चकित
उछाह	:	खुशी, छलकती खुशी
दफा	:	कानून की धारा
एकटक	:	बिना पलक झपकाए